

1

# सुबह व शाम के अज़कार



ज़ेरे इहतिमामः

सूबाई जमीअत अहले हदीस महाराष्ट्र

हजरत अनस رضي الله عنه का बयान है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि मुझे ऐसे लोगों के साथ बैठना हजरत इस्माईल عليه السلام की औलाद में से चार गुलामों को आजाद करने से ज्यादा पसन्द है जो नमाजे फ़ज्र से तुलूए आफ़ताब तक अल्लाह का जिक्र करते हैं। और मुझे ऐसे लोगों के साथ बैठना चार (गुलाम) आजाद करने से ज्यादा पसन्द है जो नमाजे अस्त्र से ग़ुस्बे आफ़ताब तक अल्लाह तआला का जिक्र करें।

(सुनन अबी दाऊद, हदीस:3667)





# सुबह के अज़्कार

1

सुबह के वक़्त:

أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، لَا إِلَهَ إِلَّا  
اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ  
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، رَبِّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِي هَذَا  
الْيَوْمِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهُ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِي هَذَا  
الْيَوْمِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهُ، رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ،  
وَسُوءِ الْكِبَرِ، رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ  
وَعَذَابٍ فِي الْقَبْرِ

अस्.बह्.ना व अस्.बहल् मुल्कु लिल्लाहि वल् हम्दु  
लिल्लाहि, ला इला.ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला  
शरी.क लहू, लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हुव  
अला कुल्लि शै.इन क़दीरु, रब्बि अस्.अलुक ख़ैर  
मा फ़ी हाज़ल् यौमि व ख़ैर मा बअ़्दहू, व अज़ज़ु  
बिक मिन् शरि मा फ़ी हाज़ल् यौमि व शरि मा



बअद्हू, रब्बि अऊज़ु बिक मिनल् कस.लि, व  
 सूइल् किव.रि, रब्बि अऊज़ु बिक मिन् अज़ाबिन्  
 फ़ीन् नारि व अज़ाबिन् फ़िल् क़ब्र

"हमने सुब्ह की और अल्लाह के सारे मुल्क ने सुब्ह की  
 और सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है। अल्लाह के सिवा  
 कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं,  
 उसी की बादशाहत है और उसी के लिए सब तारीफ़ है और  
 वह हर चीज़ पर कामिल कुदरत रखता है। ऐ मेरे रब! मैं  
 तुझ से इस दिन की बहतरी का सवाल करता हूं और उस  
 दिन की बहतरी का जो इसके बाद आने वाला है और मैं  
 इस दिन के शर से तेरी पनाह में आता हूं और इसके बाद  
 आने वाले दिन के शर से। ऐ मेरे रब! मैं काहिली और  
 बुढ़ापे की ख़राबी से तेरी पनाह में आता हूं। ऐ मेरे रब! मैं  
 आग के अज़ाब से और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह में  
 आता हूं।"

(सहीह मुस्लिम, हदीस:2723)



2

जिसने सुबह के वक़्त यह दुआ पढ़ी तो उसने इस दिन का शुक्र अदा कर दिया और जिसने शाम के वक़्त यह दुआ पढ़ी तो उसने इस रात का शुक्र अदा कर दिया।

اَللّٰهُمَّ مَا اَصْبَحَ بِيْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ،  
فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ، فَلكَ الْحَمْدُ وَلَكَ  
الشُّكْرُ

अल्लाहुम्म मा अस्.बह बी मिन् निअ.मतिन औ  
बि.अहदिम् मिन् खल्कि.क, फ़.मिन्क वह्.दक ला  
शरीक लक, फ़.लकल् हम्दु व लकश् शुक्र

"ऐ अल्लाह! सुबह के वक़्त मुझ पर या तेरी मख़लूक में से किसी पर जो भी इनाम हुवा है, वह तेरी ही तरफ़ से है। तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं, पस तेरे ही लिए सब तारीफ़ है और तेरे ही लिए शुक्र है।"

अस-सुननुल् कुबरा लिन् नसाई, हदीस:9835



3

सुब्ह एक बार:

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ اَمْسَيْنَا، وَبِكَ نَحْيَا وَبِكَ  
نَمُوتُ وَإِلَيْكَ النُّشُورُ

अल्लाहुम्म बिक अस्.बह्.ना व बिक अम्.सैना, व  
बिक नह्.या व बिक नमूतु व इलैकन् नुशूर

"ऐ अल्लाह ! तेरी ही हिफ़ाज़त में हमने सुब्ह की और तेरी  
ही हिफ़ाज़त में शाम की और तेरे ही नाम पर हम ज़िन्दा  
होते और तेरे ही नाम पर हम मरते हैं और तेरी ही तरफ़  
लौटना है।"

सिलसिला अल-अहादीस अस-सहीहा: 1/525, हदीस:262

4

सुब्ह एक बार:

أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْبُكُّ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ،  
اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذَا الْيَوْمِ، فَتْحَهُ، وَنَصْرَهُ  
، وَنُوْرَهُ وَبَرَكَتَهُ، وَهُدَاهُ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا  
فِيْهِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهُ



अस्.बह्.ना व अस्.बहल् मुल्कु लिल्लाहि रब्बिल्  
 आलमीन, अल्लाहुम्म इन्नी अस्.अलुक खैर हाज़ल्  
 यौमि, फ़त्.हहू, व नस्.रहू, व नू.रहू व बर.कत.हू,  
 व हुदाहु, व अज़ज़ु बिक मिन् शरि मा फ़ीहि व शरि  
 मा बअ्.दहु

"हमने सुब्ह की और अल्लाह रब्बुल आलमीन के सारे  
 मुल्क ने सुब्ह की। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से इस दिन की  
 बहतरी मांगता हूं, इसकी फ़त्ह व नुसरत, इसका नूर,  
 इसकी बरकत और इसकी हिदायत और मैं इस दिन के शर  
 और इसके बाद के शर से तेरी पनाह चाहता हूं।"

सुनन अबी दाऊद, हदीस:5084

5

सुब्ह के वक़्त:

أَصْبَحْنَا عَلَى فِطْرَةِ الْإِسْلَامِ، وَعَلَى كَلِمَةِ  
 الْإِخْلَاصِ، وَعَلَى دِينِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى مِلَّةِ  
 أَبِينَا إِبْرَاهِيمَ خَنِيفًا مُّسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ  
 الْمُشْرِكِينَ



अस्.बह्.ना अला फ़ित्.रतिल् इस्लामि, व अला  
कलि.मतिल् इऱ्ब्लासि, व अला दीनि नबिथ्यिना  
मुहम्मदिंव् व अला मिल्.लति अबीना इब्राहीम  
हनीफ़म् मुस्लिमंव् व मा कान मिनल् मुश्.रिकीन

"हमने फितरते इस्लाम, कलिमए इऱ्ब्लास, अपने नबी  
हज़रत मुहम्मद ﷺ के दीन और अपने बाप हज़रत  
इब्राहीम عليه السلام जो एक रुख़ (और) फ़रमांबरदार थे, की  
मिल्लत पर सुब्ह की और वह मुश्रिकों में नहीं थे।"

मुसनद अहमद: 3/406, व अमलुल यौम वल् लैलतु लि-इब्रिस् सुन्ना, हदीस:34

6

सुब्ह के वक़्त 3 मर्तबा:

سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ عَدَدَ خَلْقِهِ وَرِضَا نَفْسِهِ، وَزِنَةَ  
عَرْشِهِ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ

सुब्हानल् लाहि व बि.हम्दिही अदद खल्किही व  
रिज़ा नफ़्सिही, व ज़िन.त अर्शिही व मिदाद  
कलिमा.तिही

"मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उसकी तारीफ़ों  
के साथ, उसकी मऱ्लूक की तादाद के बराबर, उसकी ज़ात



के रज़ा के बराबर, उसके अर्श के वज़न और उसके कलिमात की रोशनाई के बराबर।"

सहीह मुस्लिम, हदीस: 2726

**7** सुब्ह चार बार, जो शख्स यह दुआ पढ़ेगा अल्लाह तआला इसे आग से आज़ाद कर देगा।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُصْبَحْتُ اُشْهِدُكَ، وَ اُشْهِدُ حَمَلَةَ  
عَرْشِكَ، وَ مَلَائِكَتَكَ، وَ جَمِیْعَ خَلْقِكَ، اَنَّكَ اَنْتَ  
اللهُ لَا اِلهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِیْكَ لَكَ، وَ اَنَّ  
مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्·बहतु उश्·हिदुक, व उश्·हिदु  
हमल·त अर्शिक, व मलाइकति·क, व जमी·अ  
खलिक्·क, अन्न·क अन्तल् लाहु ला इला·ह इल्ला  
अन्त वह्दक ला शरीक लक, व अन्न मुहम्मदन  
अब्दुक व रसूलुक

"ऐ अल्लाह! यकीनन मैंने ऐसी हालत में सुब्ह की कि तुझे, तेरा अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों, तेरे (दीगर) फ़रिश्तों और

तेरी तमाम मख़लूक को इस बात पर गवाह बनाता हूं कि तू ही अल्लाह है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं और बिलाशुबा मुहम्मद (ﷺ) तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं।"

सुनन अबी दाऊद, हदीस:5068 व 5079

**8** दिन भर में किसी भी वक़्त सौ मरतबा । जो शख्स सौ मरतबा सुब्ह के वक़्त यह दुआ पढ़ेगा, उसे दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलेगा, एक सौ नेकियां उसके नाम लिखी जाएंगी और उसके एक सौ गुनाह मिटा दिए जाएंगे और इन अल्फ़ाज़ की बरकत से इस दिन शाम तक वह शैतान से महफूज़ रहेगा और कोई शख्स उससे अफ़ज़ल अमल लेकर नहीं आएगा । ताहम अगर कोई शख्स ज़्यादा दफ़ा कहे (तो वह इससे बेहतर हो सकता है ।)

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ  
الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

ला इला·ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू,  
लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु, व हुव अला कुल्लि  
शैइन क़दीरु



"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत और उसी की तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर कामिल कुदरत रखता है।"

सहीह अल-बुख़ारी, हदीस:3293



दिन भर में सौ मरतबा पढ़े:

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ

अस्तग्-फ़िरुल्-लाहि व अतूबु इलैह

"मैं अल्लाह से बख़्शिश मांगता हूँ और उसके हुज़ूर तौबा करता हूँ।"

सहीह अल-बुख़ारी, हदीस:6307

# सुबह व शाम के अज़्कार

**1** जो शरूब सुबह के वक़्त आयतल् कुर्सी पढ़े वह शाम तक जिन्नो से महफूज़ हो जाता है और जो इसे शाम के वक़्त पढ़े वह सुबह तक इन से महफूज़ हो जाता है।

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا  
نَوْمٌ ۚ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ مَنْ ذَا  
الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ  
أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ  
عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْ  
أَرْضَ ۚ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ  
الْعَظِيمُ ○

अल्लाहु ला इलाह इल्ला हु-वल् हय्युल् क़य्यूम, ला  
तअख़ुज़ुहू सिन.तुव् वला नौमु, लहू मा फ़िस्  
समावाति व मा फ़िल् अर्ज़, मन् ज़ल्लज़ी यश्फ़उ  
इन्दहू इल्ला बि.इज़िन्ह. यअ़्लमु मा बै.न ऐदीहिम





व मा खल्फ़हुम् . व ला युहीतू.न बि.शैइम् मिन्  
इल्मिहि इल्ला बिमा शा.अ. वसि.अ कुर्सिय्युहुस्  
समावाति वल् अर्ज़, व ला यऊदुहू हिफ़ज़ुहुमा, व  
हुवल् अलिय्युल् अज़ीम ।

अल्लाह ही माबूदे बरहक़ है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं,  
जो ज़िंदा और सबका थामने वाला है, जिसे ना ऊँघ आती  
है ना नींद, उसकी मिलिकियत में ज़मीन और आसमानों की  
तमाम चीज़ें हैं। कौन है जो उसकी इजाज़त के बग़ैर उसके  
सामने शफ़ाअत कर सके, वह जानता है जो उनके सामने है  
जो उनके पीछे है और वह के इल्म में से किसी चीज़ का  
इहाता नहीं कर सकते मगर जितना वह चाहे, उसकी कुर्सी  
की वुसअत ने ज़मीन और आसमान को घेर रखा है, वह  
अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त से ना थकता है और ना उकताता  
है, वह तो बहुत बुलंद और बहुत बड़ा है।

सहीह अत-तरगीब वत् तरहीब, हदीस:662

2

जो शरूस् आख़िरी तीनों कुल तीन (यानी सूरह इऱ्ब्लास, सूरह  
फ़लक, सूरह नास) दफ़ा सुब्ह और तीन दफ़ा शाम के वक़्त  
पढ़े, यह अमल इसके लिए दुन्या की हर चीज़ की किफ़ालत  
के वास्ते काफ़ी हो जाता है।

﴿بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ﴾

﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝﴾

﴿बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम﴾ ﴿कुल्-हु वल्लाहु  
अहद ० अल्लाहुस् समद ० लम् यलिद व लम्  
यूलद ० व लम् यकुल् लहू कुफूवन अहद ०﴾

﴿بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ﴾

﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ  
شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ  
۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝﴾

﴿बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम﴾ ﴿कुल् अऊजु  
बि-रब्बिल् फ़लक ० मिन् शरि मा ख़लक ० व  
मिन् शरि ग़ासिक्निन इज़ा वक़ब ० व मिन् शरिन्

नफ़्फ़ासाति फ़िल् उक्रद ० व मिन् शरि हासिदिन  
इज़ा हसद ०)

﴿بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ﴾

﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ० مَلِكِ النَّاسِ ० إِلَهِ  
النَّاسِ ० مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ० الَّذِي  
يُوسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ० مِنَ الْجَنَّةِ وَالنَّاسِ ०﴾

﴿(बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम)﴾ (कुल् अऊज़ु  
बि॰रब्बिन् नास ० मलिकिन् नास ० इलाहिन् नास ०  
मिन् शरिल् वस्वासिल् खन्नास ० अल्लज़ी यु॰वस्विसु  
फ़ी सुदूरिन् नास ० मिनल् जिन्नति वन् नास)﴾

आप कह दीजिए कि वह अल्लाह एक (ही) है। अल्लाह  
बेनियाज़ है। ना उससे कोई पैदा हुआ, ना वह किसी से पैदा  
हुआ। और ना कोई उसका हमसर है।

112. सूरतुल इक्लास

आप कह दीजिए कि मैं सुब्ह के रब की पनाह में आता हूँ।  
हर उस चीज़ के शर से जो उसने पैदा की है। और अंधेरी  
रात की तारीकी के शर से जब उसका अंधेरा फैल



जाए। और गिरह (लगा कर उन) में फूंकने वालियों के शर से भी। और हसद करने वाले की बुराई से भी जब वह हसद करे।

सूरतुल फ़लक़

आप कह दीजिए! कि मैं लोगों के परवरदिगार की पनाह में आता हूँ। लोगों के मालिक की। और लोगों के माबूद की (पनाह में)। वसवसा डालने वाले, पीछे हट जाने वाले के शर से। जो लोगों के सीनों में वसवसे डालता है। (ऱव्वाह) वह जिनों में से हो या इन्सानों में से।

सूरतुल नास

3

सुब्ह व शाम सात मरतबा:

حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ  
الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

हस्बियल्लाहु ला इलाह इल्ला हुव अलैहि तवक्कलतु  
व हुव रब्बुल् अर्शिल् अज़ीम

मुझे अल्लाह ही काफ़ी है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसी पर मैंने भरोसा किया और वह अर्शे अज़ीम का रब है।

सुनन अबी दाऊद, हदीस:5081



4

सुबह व शाम एक मरतबा:

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ أَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ  
كُلَّهُ، وَلَا تَكِلْنِيْ إِلَى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ

या हय्यू या क़य्यूमु बि-रहमतिक अस्तगीसु अस्लिह्  
ली शअनी कुल्लहू, व ला तकिल्नी इला नफ़सी  
तर्फ़-त ऐयन

"ऐ ज़िन्दए जावेद ! ऐ क़ाइम व दाइम ! मैं तेरी ही रहमत के  
ज़रिए से मदद तलब करता हूँ, तू मेरा हर काम संवार दे  
और आँख झपकने के बराबर भी मुझे मेरे नफ़्स के सुपुर्द  
ना करना ।"

अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, हदीस:2000

5

सुबह व शाम तीन बार

اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَدَنِيْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ سَمْعِيْ،  
اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَصَرِيْ، لَا اِلَهَ اِلَّا اَنْتَ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ  
اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْكُفْرِ ، وَالْفَقْرِ ، وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ

# عَذَابِ الْقَبْرِ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ

अल्लाहुम्म आफ़िनी फ़ी बदनी, अल्लाहुम्म  
आफ़िनी फ़ी समई, अल्लाहुम्म आफ़िनी फ़ी बसरी,  
ला इलाह इल्ला अन्त, अल्लाहुम्म इन्नी अज़ुज़ुबिक  
मिनल् कुफ़्रि, वल् फ़क्ररि, व अज़ुज़ुबिक मिन्  
अज़ाबिल् क़ब्रि, ला इलाह इल्ला अन्त

"ऐ अल्लाह! मुझे मेरे बदन में आफ़ियत दे। ऐ अल्लाह!  
मुझे मेरे कानों में आफ़ियत दे। ऐ अल्लाह! मुझे मेरी  
आँखों में आफ़ियत दे, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। ऐ  
अल्लाह! यक़ीनन मैं कुफ़्र और ग़ुरबत से तेरी पनाह में  
आता हूँ और ऐ अल्लाह! यक़ीनन मैं अज़ाबे क़ब्र से तेरी  
पनाह में आता हूँ, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।"

सुनन अबी दाऊद, हदीस:5090

**6** सुब्ह शाम 3 मर्तबा, जो शरूस् यह दुआ सुब्ह और शाम  
पढ़ेगा, उसे कोई चीज़ तकलीफ़ नहीं देगी।

بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ  
وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ



बिस्मिल्लाहिल् लज़ी ला यज़ुरु मअ् अस्मिही शैउन  
फ़िल् अर्ज़ि व ला फ़ीस् समाइ व हुवस् समीइल्  
अलीम

"उस अल्लाह के नाम के साथ जिसके नाम की बरकत से कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकती, ज़मीन की हो या आस्मानों की और वह ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है।"

जामेअ् अत-तरमज़ी, हदीस:3388

**7** सुब्ह शाम 3 मर्तबा, जो शरूब यह दुआ तीन दफ़ा सुब्ह और तीन दफ़ा शाम के वक़्त पढ़ेगा, अल्लाह तआला उसे क़ियामत के दिन ज़रूर ख़ुश करेगा।

رَضِيتُ بِاللّهِ رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا

रज़ीतु बिल्लहि रबव् व बिल् इस्लामि दीनवं व बि-  
मुहम्मदिन् नबिय्या

"मैं अल्लाह के साथ (उसके) रब होने पर राज़ी हो गया और इस्लाम के साथ (उसके) दीन होने पर और मुहम्मद (ﷺ) के साथ (उनके) नबी होने पर।"

जामेअ् अत-तरमज़ी, हदीस:3389

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: " जो शरक्स यक़ीन की हालत में शाम के वक़्त यह दुआ पढ़े और उसी रात फ़ौत हो जाए तो वह शरक्स जन्नत में जाएगा और इसी तरह (हालते यक़ीन में) जो शरक्स सुबह के वक़्त यह दुआ पढ़ ले और शाम तक फ़ौत हो जाए तो वह भी जन्नत में जाएगा ।"

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَا اِلَهَ اِلَّا اَنْتَ، خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَبْدُكَ، وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَاِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

अल्लाहुम्म अन्त रब्बी ला इलाह इल्ला अन्त,  
ख़लक़तनी व अना अब्दुक, व अना अला अह्दिक  
व वअ्दिक मा इस्ति-तअ्तु, अऊज़ुबिक मिन् शरि  
मा सनअ्तु, अबू उ लक बि-निअ्मतिक अलैय्य व  
अबू उ बि-ज़म्बी फ़-ग़ि़ली फ़-इन्नहू ला यग़ि़रुज़्  
ज़ुनूब इल्ला अन्त



📌  
"ऐ अल्लाह! तू ही मेरा रब है, और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तूने मुझे पैदा फ़रमाया और मैं तेरा बन्दा हूँ और मैं अपनी ताक़त के मुताबिक़ तेरे अहेद और वादे पर क़ाइम हूँ, मैं तुझ से उस चीज़ के शर से पनाह मांगता हूँ जिसका मैंने इर्तिकाब किया, मैं तेरे सामने तेरे इनाम का इक़रार करता हूँ जो मुझ पर हुवा और मैं अपने गुनाहों का इक़रार करता हूँ, लिहाज़ा तू मुझे माफ़ कर दे। वाक़िया यह है कि तेरे सिवा कोई गुनाहों को माफ़ नहीं कर सकता।"

सहीह अल-बुख़ारी, हदीस:6306। यह दुआ सय्यदुल् इस्तिफ़ार कहलाती है।

8

सुबह व शाम:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَةَ فِی الدُّنْیَا  
وَالْآخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَةَ فِی  
دِیْنِیْ وَدُنْیَایْ وَاهْلِیْ وَمَالِیْ، اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِیْ  
وَامِنْ رَّوْعَاتِیْ، اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِیْ مِنْ بَیْنِ یَدَیْیْ وَمِنْ  
خَلْفِیْ وَعَنْ یَمَیْنِیْ وَعَنْ شِمَالِیْ، وَمِنْ فَوْقِیْ، وَاَعُوْذُ  
بِعَظَمَتِكَ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِیْ



अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल् अफ्.व वल्  
 आफ़ि.यत फ़िद् दुन्या वल् आख़िर.ति, अल्लाहुम्म  
 इन्नी अस्अलुकल् अफ्.व वल् आफ़ि.यत फ़िद्  
 दीनी वद् दुन्या व अह्ली व माली, अल्लाहुम्म अस्तुर  
 औराती व आमिर् रौआती, अल्लाहुम्म अह्फ़ज़्नी  
 मिम् बैनी यदैय्य व मिन् ख़ल्फ़ी व अय् यमीनी व  
 अन् शिमाली, व मिन् फ़ौक़ी, व अज़ज़ु बि  
 अज़मतिक अन् उग़ताल मिन् तह्ती

"ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझ से दुन्या और आख़िरत में माफ़ी और  
 आफ़ियत का सवाल करता हूँ, ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझ से अपने  
 दीन, अपनी दुन्या और अपने अहल व माल में माफ़ी और  
 आफ़ियत का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह! मेरे ऐबों पर पर्दा डाल  
 दे और मेरी घबराहटों में अमन दे। ऐ अल्लाह! तू मेरी हिफ़ाज़त  
 फ़रमा मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरे दाएं तरफ़ से, मेरे बाएं तरफ़  
 से और मेरे ऊपर से। और मैं तेरी अज़मत के साथ इस बात से  
 पनाह मांगता हूँ कि नागहां अपने नीचे से हलाक किया जाऊं।"

सुनन अबी दाऊद, हदीस:5074 व सुनन इब्न माजह, हदीस:3871



9

सुबह व शाम:

اَللّٰهُمَّ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ  
وَالْاَرْضِ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيْكَهٗ، اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلَهَ اِلَّا اَنْتَ  
، اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشَرِّكَهٗ ،  
وَاَنْ اَقْتَرِفَ عَلٰى نَفْسِيْ سُوْءًا اَوْ اُجْرَّهٗ اِلٰى مُسْلِمٍ

अल्लाहुम्म अलिमल् गैबि वश् शहाद.ति फ़ातिरस्  
समावाति वल् अर्जि रब्ब कुल्लि शैइवं व मलीकहू,  
अश्.हदु अल् ला इलाह इल्ला अन्त, अऊज़ु बिक मिन्  
शरि नफ़सी व मिन् शरिश् शैतानि व शिर्किही, व अन्  
अक्रतरिफ़ अला नफ़सी सू.अन औ अजुरहू इला मुस्लिमिन्  
"ऐ अल्लाह! ग़ैब और हाज़िर के जानने वाले! आस्मानों और  
ज़मीन के पैदा करने वाले! हर चीज़ के रब और उसके मालिक! मैं  
गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। मैं तेरी पनाह में  
आता हूँ अपने नफ़स के शर से और शैतान के शर से और उसके  
शिरक से और इस बात से कि अपने ही खिलाफ़ किसी बुराई का  
इर्तिकाब करूँ या उसे किसी मुसलमान की तरफ़ खींच लाऊँ।"

सुनन अबी दाऊद, हदीस:5083, जामेअ् अत-तरमिज़ी, हदीस:3392, 3529

10

जो शरूब्स इसे सुब्ह के वक़्त पढ़ेगा, उसके लिए दस नेकियां लिखी जाएंगी, दस गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे, दस दरजात बुलन्द किए जाएंगे और यह दुआ बनी इस्माईल में से दस गर्दन आज़ाद करने के बराबर है, नीज़ अल्लाह तआला यह दुआ पढ़ने वाले को शैतान से महफूज़ रखेगा। और जो इसे शाम के वक़्त पढ़ेगा, उसके लिए भी यही अज़्र है। सुब्ह व शाम दस बार अगर काहिली का शिकार हो तो एक बार पढ़ ले:

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ  
الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू, लहुल्  
मुल्कु व लहुल् हम्दु, व हुव अला कुल्लि शैइन क़दीरु

"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत और उसी की तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर कामिल कुदरत रखता है।"

सुनन अबी दाऊद, हदीस:5077



11

जो शरूब्स यह दुआ सौ मरतबा सुब्ह और सौ मरतबा शाम को पढ़ेगा, क़ियामत के दिन कोई शरूब्स उसके अमल से अफ़ज़ल अमल लेकर नहीं आएगा। ताहम अगर कोई शरूब्स इसके बराबर या इससे ज़्यादा दफ़ा कहे तो वह इससे बेहतर हो सकता है।

سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ

सुब्हानल्-लाहि व बि-हम्दिहि

"मैं अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता हूँ उसकी तारीफ़ के साथ।"

सहीह मुस्लिम, हदीस:2692

12

सुबह, शाम दस मरतबा कोई मसून दरूद पढ़े, जैसे:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिवं व अला आलि मुहम्मद

"ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद (ﷺ) पर और आले मुहम्मद (ﷺ) पर।"

सुनन अन-नसाई, हदीस:1293, व मज्मउज़् ज़वाइद, हदीस:17022



# शाम के अज़्कार

1

शाम के वक़्त:

أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ  
وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَزِيزٌ  
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، رَبِّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِي هَذِهِ اللَّيْلَةِ  
وَأَخَيْرَ مَا بَعْدَهَا، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَشَرِّ  
مَا بَعْدَهَا، رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَسُوءِ الْكِبَرِ،  
رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ وَعَذَابٍ فِي الْقَبْرِ

अम्.सैना व अम्.सल् मुल्कु लिल्लाहि वल् हम्दु  
लिल्लाहि, ला इला.ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला  
शरी.क लहू, लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हुव  
अला कुल्लि शै.इन क़दीरु, रब्बि अस्.अलुक ख़ैर  
मा फ़ी हाज़िहिल् लैलति व ख़ैर मा बअ़्दहा, व  
अज़्ज़ु बिक मिन् शरि मा हाज़िहिल् लैलति व शरि  
मा बअ़्दहा, रब्बि अज़्ज़ु बिक मिनल् कस.लि, व

# सूइल् किब.रि, रब्बि अज़ुज़ु बिक मिन् अज़ाबिन् फ़ीन् नारि व अज़ाबिन् फ़िल् क़ब्र

"हमने शाम की और अल्लाह के सारे मुल्क ने शाम की और सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत है और उसी के लिए सब तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर कामिल कुदरत रखता है। ऐ मेरे रब! मैं तुझ से इस रात की बहतरी का सवाल करता हूं और उस रात की बहतरी का जो इसके बाद आने वाली है और मैं इस रात के शर से तेरी पनाह में आता हूं और इसके बाद आने वाली रात के शर से, ऐ मेरे रब! मैं काहिली और बुढ़ापे की ख़राबी से तेरी पनाह में आता हूं। ऐ मेरे रब! मैं आग के अज़ाब से और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह में आता हूं।"

सहीह मुस्लिम, हदीस:2723

2

शाम के वक़्त:

اَللّٰهُمَّ مَا اَمْسٰى بِيْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ،  
فَمِنْكَ وَحَدَاكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ ، فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ  
الشُّكْرُ



अल्लाहुम्म मा अम्.स बी मिन् निअ्.मतिन औ  
बि.अहदिम् मिन् खल्कि.क, फ़.मिन्क वह्.दक ला  
शरीक लक, फ़.लकल् हम्दु व लकश् शुक्र

"ऐ अल्लाह! शाम के वक़्त मुझ पर या तेरी मरज़ूक में से किसी  
पर जो भी इनाम हुवा है, वह तेरी ही तरफ़ से है। तू अकेला है,  
तेरा कोई शरीक नहीं, पस तेरे ही लिए सब तारीफ़ है और तेरे ही  
लिए शुक्र है।"

अस-सुननुल् कुबरा लिन् नसाई, हदीस:9835

3

शाम के वक़्त:

اَللّٰهُمَّ بِكَ اُمْسَيْنَا، وَبِكَ اُصْبَحْنَا، وَبِكَ نَحْيَا،  
وَبِكَ نَمُوتُ وَإِلَيْكَ الْبَصِيْرُ

अल्लाहुम्म बिक अम्.सैना व बिक अस्.बह्.ना, व  
बिक नह्.या व बिक नमूतु व इलैकल् मसीर

"ऐ अल्लाह! तेरी ही हिफ़ाज़त में हमने शाम की और तेरी ही  
हिफ़ाज़त में सुबह की और तेरे ही नाम के साथ हम ज़िन्दा होते  
और तेरे ही नाम के साथ हम मरते हैं और तेरी ही तरफ़ उठ कर  
जाना है।"

सिलसिलातुल् अहादीसुस् सहीहा: 1/525, हदीस:262



4

शाम के वक़्त:

أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ اللَّهُمَّ  
إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذِهِ اللَّيْلَةِ فَتَحَهَا وَنَصَرَهَا  
وَنُورَهَا وَبَرَكَتَهَا وَهُدَاهَا وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا  
فِيهَا وَشَرِّ مَا بَعْدَهَا

अम्.सैना व अम्.सल् मुल्कु लिल्लाहि रब्बिल्  
आलमीन, अल्लाहुम्म इन्नी अस्.अलुक ख़ैर  
हाज़िहिल् लैलति, फ़त्.हहा, व नस्.रहा, व नू.रहा  
व बर.कत.हा, व हुदाहा, व अज़्ज़ु बिक मिन् शरि  
मा फ़ीहा व शरि मा बअ्.दहा

"हमने शाम की और अल्लाह रब्बुल आलमीन के सारे मुल्क ने  
शाम की। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से इस रात की बहतरी मांगता हूँ,  
इसकी फ़त्ह व नुसरत, इसका नूर, इसकी बरकत और इसकी  
हिदायत और मैं तुझ से इस रात के शर और इसके बाद के शर से  
पनाह चाहता हूँ।"

सुनन अबी दाऊद, हदीस:5084





5

शाम के वक़्त तीन मरतबा:

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

अरुज़ु बि-कलिमातिल् लाहित् ताम्माति मिन् शरि  
मा ख़लक़

"मैं अल्लाह के मुकम्मल कलिमात की पनाह में आता हूँ, उसकी मरुल्लूक़ के शर से।"

सहीह मुस्लिम, हदीस: 2709

6

शाम के वक़्त चार मरतबा, जो शरख़्स यह दुआ पढ़ेगा अल्लाह तआला उसे आग से आज़ाद कर देगा।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُمْسِیْتُ اَشْهِدُكَ، وَاَشْهَدُ حَمَلَةَ  
عَرْشِكَ، وَمَلَائِکَتَكَ، وَجَمِیْعَ خَلْقِكَ، اَنَّكَ اَنْتَ  
اِلٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِیْكَ لَكَ، وَاَنَّ  
مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ

अल्लाहुम्म इन्नी अम्·सैतु उश्·हिदु·क, व उश्·हिदु  
हमल·त अर्शि·क, व मलाइकति·क, व जमी·अ



खल्कि·क, अन्न·क अन्तल् लाहु ला इला·ह इल्ला  
अन्त वह्दक ला शरीक लक, व अन्न मुहम्मदन  
अब्दुक व रसूलुक

"ऐ अल्लाह! यकीनन मैंने ऐसी हालत में शाम की कि तुझे, तेरा  
अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों, तेरे (दीगर) फ़रिश्तों और तेरी तमाम  
मरूलूक को इस बात पर गवाह बनाता हूं कि तू ही अल्लाह है, तेरे  
सिवा कोई माबूद नहीं, तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं और  
बिलाशुबा मुहम्मद (ﷺ) तेरे बन्दे और रसूल हैं।"

सुनन अबी दाऊद, हदीस:5069 व 5078